राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष ३२ अंक १ जनवरी २०११ नयी दिल्ली मूल्य ५ रु. पृष्ठ २८

भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष का शंखनाद

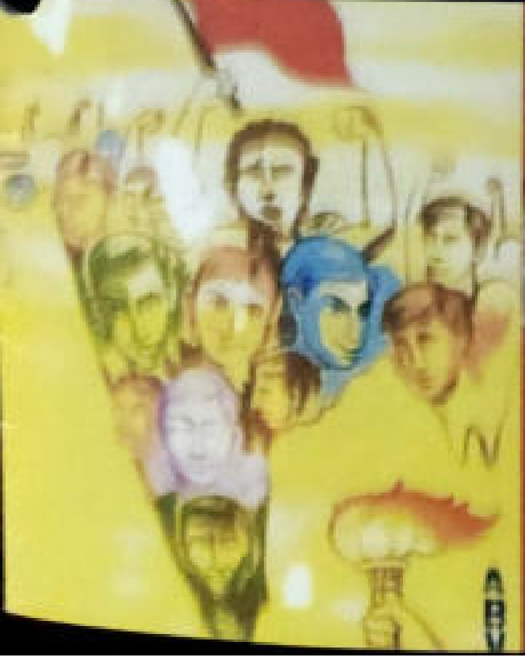

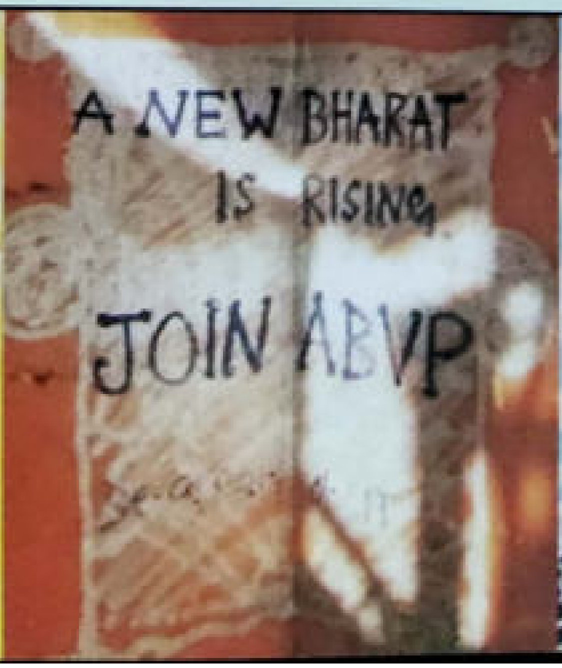

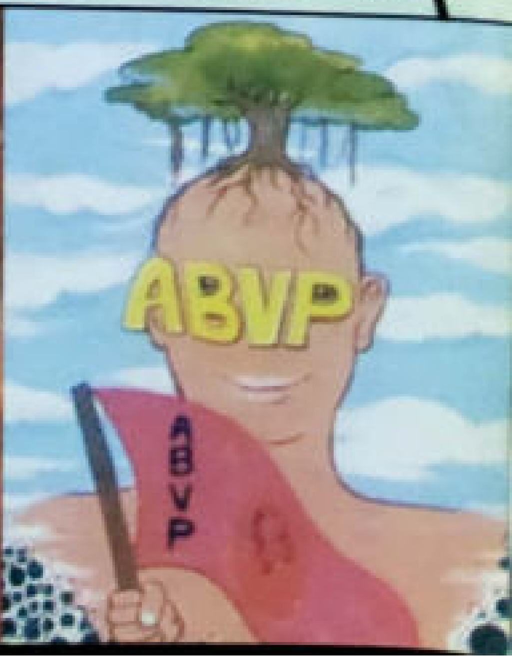

ABVP

BHARAT
RISING
ABVP

RE-WIND

ABVP

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

सम्पादकः
आशुतोष

सम्पादक मण्डलः
संजीव कुमार सिन्हा
आशीष कुमार 'अंशु'
उमाशंकर मिश्र

फोन : ०११-४३०६८२४८
ईमेल : chhatrashakti@gmail.com
वेबसाइट : www.abvp.org

मुद्रक और प्रकाशक राजकुमार शर्मा द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बी-५०, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल इंस्टीट्यूट, दिल्ली-११०००७ के लिए प्रकाशित एवं मॉडर्न प्रिन्टर्स, के.३० नवीन शहादरा, दिल्ली- ३२ द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृ.सं.
संपादकीय		४
भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष का ऐलान		५
भारत को मजबूत बनाने के लिए आगे आएं युवा	-सुनील आम्बेकर	८
भारतीय संस्कृति भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति	- दत्तात्रेय	९
अभाविप का 'मौन तोड़ो' अभियान शुरू		१४
गांधी जी का चश्मा	- विजय कुमार	१८
५६ वां राष्ट्रीय अधिवेशन महामंत्री प्रतिवेदन	-विष्णुदत्त शर्मा	२०
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद : राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद २०१०-११		२३
५६वां राष्ट्रीय अधिवेशन : पारित प्रस्ताव		२४

वैधानिक सूचनाः राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखकों के हैं। सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

२५ से २८ दिसम्बर २०१० को बेंगलुरू में सम्पन्न अभाविप का राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक दृष्टि से उल्लेखनीय था। एक ओर जहां संख्या की दृष्टि से यह काफी बड़ा था वहीं व्यवस्थाएं जुटाने में भी परिषद की कर्नाटक इकाई ने अथक परिश्रम किया।

लगभग सात हजार प्रतिनिधियों के स्वागत के लिये एक हजार से अधिक कार्यकर्ता गत एक वर्ष से व्यवस्थाओं में लगे थे। पांच किलोमीटर की परिधि में फैले हुए प्रतिनिधियों के आवास में समय पर सारी सुविधाएं जुटाने के लिये व्यवस्था के कार्यकर्ताओं ने दिन-रात परिश्रम किया। सभा मंडप और कार्यक्रम स्थल की भव्यता देखते ही बनती थी। आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ देशज लोककलाओं का अपूर्व संगम आयोजकों की कल्पनाशीलता और सुरुचि का परिचय दे रहे थे। प्रतिदिन रात को सभास्थल पर सब ओर जब दीप जलाये जाते थे तो मानो कोई आकाशगंगा धरती पर उतर आती थी।

एक ओर दिव्यता और भव्यता का यह उत्सव चल रहा था तो दूसरी ओर देश की परिस्थितिया, भ्रष्टाचार के नित नये खुलासे और सत्ता प्रतिष्ठान द्वारा भ्रष्टाचारियों को संरक्षण तथा राष्ट्रीयता और राष्ट्र की अस्मिता के मान बिंदुओं पर किये जा रहे आघात अधिवेशन में उपस्थित विद्यार्थियों के मन को मथ रहे थे।

अधिवेशन और उससे पहले हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक में इन सभी बिंदुओं पर गहन चर्चा हुई। भ्रष्टाचार पर प्रस्ताव जब रखा गया तो मानो छात्र-छात्राओं के भीतर से लावा ही बह निकला। हर कोई चाहता था कि इसके खिलाफ परिषद को खम ठोक कर खड़ा होना चाहिये। राष्ट्रीय महामंत्री ने जब भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष की घोषणा की तो सभागार में उपस्थित उस लघु भारत ने इसका जबरदस्त अनुमोदन किया।

भ्रष्टाचार का यह दौर तो संप्रग-१ के समय ही प्रारंभ हो गया था। ईमानदार प्रधानमंत्री को आगे कर भ्रष्टाचार के नये कीर्तिमान बनाने में कांग्रेस और उसके सहयोगी दल जुटे हुए थे। इन घोटालों के खुलासे के बाद भी समाज की ओर से जो प्रतिकार होना चाहिये था वह नहीं हुआ इसलिये इन भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों का हौंसला बढ़ता गया। विश्वसनीय नेतृत्व के अभाव में समाज का गुस्सा सड़कों पर परिलक्षित नहीं हुआ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शिक्षा क्षेत्र को अपनी सीमा मानती है साथ ही दल और सत्ता की राजनीति से स्वयं को पृथक करती है किन्तु उसकी यह भी मान्यता है कि जब देश की अस्मिता और उसके सांस्कृतिक आधार पर ही चोट होने लगे तो यह स्थिति अस्वीकार्य है। ऐसी स्थिति में इसका प्रतिकार परिषद का कर्तव्य भी है और अधिकार भी।

अधिवेशन में यह गंभीरता से अनुभव किया गया कि भ्रष्टाचार आज जिस रूप और विस्तार के साथ सामने आया है वह अभूतपूर्व है और साधारण भ्रष्टाचार की सीमा लांघ कर देशद्रोह की स्थिति में पहुंच गया है। यही कारण है कि परिषद को शिक्षा क्षेत्र के अपने स्वाभाविक परिसर के बाहर आकर भ्रष्ट व्यवस्था को ललकारने का काम करना पड़ा है।

स्थानीय इकाइयों पर धरने-प्रदर्शन से इस अभियान की शुरुआत हो गयी है लेकिन जैसे-जैसे यह लड़ाई आगे बढ़ेगी, संघर्ष तीखा होता जायेगा। अधिवेशन में इस लड़ाई का आह्वान किया गया है और अभाविप इसे निर्णायक बिन्दु तक पहुंचाने के लिये संकल्पबद्ध है।

५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन का चित्रावली द्वारा जीवंत अनुभव कराने वाला यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पर आपकी प्रतिक्रिया अपेक्षित है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ५६वां राष्ट्रीय अधिवेशन

अभाविप का भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष का ऐलान

बेंगलुरू। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करने की घोषणा की है। अभाविप के ५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन को संबोधित करते हुए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मिलिन्द मराठे ने राष्ट्रमंडल खेल, २जी स्पेक्ट्रम तथा आदर्श हाउसिंग सोसाइटी घोटाले में केन्द्र सरकार की भूमिका पर सवाल खड़ा किया और कहा कि प्रधानमंत्री इसकी जिम्मेदारी से बच नही सकते। अभाविप इस मुद्दे को जन-जन तक ले जायेगी और सरकार को निर्णायक कार्रवाई करने पर बाध्य करेगी।

श्री मराठे ने इन घोटालों की जांच संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से कराने की मांग करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार से घिरी सरकार अपनी नाकामियों को छिपाने के लिये ही (जेपीसी) से पीछे हट रही है। नीरा राडिया के टेप का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मंत्रिमंडल तय करने का जो काम देश के प्रधानमंत्री को करना चाहिये अब वह औद्योगिक घराने, पत्रकार और दलाल कर रहे हैं।

शिक्षा पर बोलते हुए श्री मराठे ने कहा कि देश में इस क्षेत्र में जिस तरह व्यापारीकरण बढ़ा है उससे देश की प्रतिभा उच्च शिक्षा से वंचित हो रही है। गुजरात का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जब इस राज्य में सभी सरकारी इंजीनियरिंग कालेजों की फीस आज भी दो हजार रूपये है तो किस आधार पर भारत के अन्य राज्यों में ४० हजार से अधिक शुल्क छात्रों से वसूला जा रहा है। इसका समाधान सिर्फ केन्द्रीय कानून बनाकर ही किया जा सकता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगठन की प्रासंगिकता की चर्चा करते हुए श्री मराठे ने कहा कि अभाविप का मानना है कि छात्र कल का नही आज का नागरिक है। अभाविप ने यह संगठन केवल छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिये नही बनाया है बल्कि देश की प्रत्येक उस समस्या के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिये जो समाज को प्रभावित करती हैं। संगठन का उद्देश्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण करना है।

उन्होंने कहा कि अभाविप भारत का ही नहीं वरन् विश्व का सबसे अनोखा और आदर्श छात्र संगठन है। इसके अनूठेपन का सबसे बड़ा उदाहरण यही है कि प्रवाहमान छात्रों का संगठन होते हुए भी ६० वर्षों से अधिक समय से लगातार स्थाई रूप से कार्य कर रहा है। परिषद का उद्देश्य है कि देश में एक ऐसा आन्दोलन चलाया जाये जो समाज के अंदर एक नयी ऊर्जा का संचार कर सके।

अभाविप के 56वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 'भविष्य के दिशा सूत्र' और 'भारत समृद्धि का मार्ग' पुस्तक का लोकार्पण करते मंचासीन अतिथि

अभाविप की ६० वर्षों की विकास यात्रा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि परिषद ने अपने स्थापना काल से ही शिक्षा के भारतीयकरण के विषय को जोरदार तरीके से उठाया है। साथ ही देश की वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में समय-समय पर आन्दोलन कर समाज को जागरूक करने का कार्य किया है। चाहे वह कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने के लिये किया गया मार्च हो या फिर नक्सलवाद, अलगाववाद या देश में हो रही अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ इन सभी मुद्दों पर अभाविप ने आन्दोलन कर सरकार को चेतावनी दी है।

श्री मराठे ने कहा कि अभाविप अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा समाज जागरण का कार्य करती आ रही है। इसी कड़ी में अभाविप जल, जन, जानवर, जंगल और जमीन की सुरक्षा की दिशा में आगे की रणनीति तैयार कर रही है। उन्होंने कहा कि अभाविप के इस अधिवेशन में देश के प्रत्येक राज्य के जिलों से आये प्रतिनिधियों ने इस प्रांगण को लघु भारत का रूप प्रदान किया है।

अधिवेशन का उदघाटन करते हुए प्रख्यात न्यायविद एवं पूर्व राज्यपाल श्री एम. रामा जॉयस ने कहा कि किसी भी देश की दिशा का निर्धारण वहां की शिक्षा करती है। वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए यह साबित होता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में कहीं कोई बड़ी गड़बड़ी है। उन्होंने कहा कि भारत की सामाजिक व्यवस्था कर्तव्यप्रधान है और हमें इंडिया को भारत बनाने का प्रयास करना चाहिये। श्री जॉयस ने अधिवेशन में उपस्थित छात्र-युवाओं से भ्रष्टाचार के विरूद्ध खुले संघर्ष की घोषणा करने का आह्वान किया। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ विद्यार्थियों और युवाओं को आगे आकर पहल करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने भ्रष्टाचार के लिये दिशाविहीन नेताओं को जिम्मेदार ठहराया।

अधिवेशन के उद्घाटक के रूप में बेंगालुरू विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एन. प्रभुदेवा ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र से जुड़ाव होने के कारण शिक्षा क्षेत्र की समस्याएं मेरे केन्द्र बिन्दु में रहती है और समस्याओं के संदर्भ में अभाविप द्वारा किया गया कार्य सराहनीय है। कुलपति डॉ. एन. प्रभुदेवा ने शिक्षा के निजीकरण को व्यापारीकरण बनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि शिक्षा अब व्यापार की वस्तु बनती जा रही है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता पर काफी असर पड़ा है।

इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने 'भविष्य के दिशा सूत्र' और 'भारत समृद्धि का मार्ग' पुस्तकों का लोकार्पण भी किया।

अधिवेशन के दूसरे दिन भाषण सत्र के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील

आबेकर ने कल का भारत - हमारी दृष्टि विषय पर विचार व्यक्त किये।

इसी दिन शाम को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा में देश के कोने-कोने से आये प्रतिनिधि अपनी पारंपरिक वेश-भूषा में सड़कों पर उतरे तो ऐसा लगने लगा मानो पूरा भारत एक साथ चल रहा हो। देश और समाज के प्रति जागरूकता लाने वाले ओजपूर्ण नारों के साथ निकली अभाविप की शोभा यात्रा आनन्दराव चौराहे पर आकर सभा में बदल गयी। वहां आयोजित खुले अधिवेशन में राजस्थान वि.वि. छात्रसंघ अध्यक्ष मनीष यादव, डूसू अध्यक्ष जितेन्द्र चौधरी, राष्ट्रीय महामंत्री उमेशदत्त शर्मा एवं अध्यक्ष प्रा. मिलिन्द मराठे ने सभा को संबोधित किया।

२८ दिसंबर को प्रा. यशवंतराव केलकर स्मृति युवा पुरस्कार के लिये सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने वाले बिहार के आनन्द कुमार को सम्मानित किया गया। आनन्द कुमार ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने आईआईटीए जेईई परीक्षा में गरीब मेधावी छात्रों को पढ़ाकर बड़ी संख्या में चयनित कराया है। इसी कार्यक्रम में भारतीय फिल्मों में ध्वनि संपादक एवं निर्माता डा. रसुल पुकुट्टी को भी सम्मानित किया गया।

इससे पहले ५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन मां सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डी.एम. किरण, श्री विनय बिद्रे, डा. राममूर्ति, डा. श्रीनिवास वल्ली, डा. एम. जयदेवा और श्री उमेशदत्त शर्मा उपस्थित रहे।

चार दिन तक चले इस अधिवेशन में देशभर के ८ हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। अधिवेशन स्थल को प्लास्टिक फ्री जोन बनाया गया था। यहां भोजन पात्र से लेकर फाइल तक सभी उपयोग में आने वाली वस्तुओं को कागज, कपड़े और पत्तों से तैयार किया गया था। अधिवेशन में सामूहिक वंदेमातरम् का गायन ८०० छात्राओं ने परंपरागत परिधानों में किया।

अधिवेशन में प्रतिनिधियों की सुविधा हेतु एल. सी.डी. स्क्रीन का प्रयोग किया गया था। तथा कार्यक्रमों का प्रसारण अभाविप की वेबसाइट पर आन लाइन किया जा रहा था।

अधिवेशन में आये देश के सभी राज्यों के हर जिलों के प्रतिनिधियों से पूरा परिसर लघु भारत का दर्शन करा रहा था। अधिवेशन स्थल के चारो तरफ जलाये गये तेल के दिये इसकी भव्यता को और बढ़ा रहे थे।

अधिवेशन के अंतिम दिन बेंगलूरू की सड़कों पर अभाविप की शोभायात्रा पर स्थानीय नागरिकों द्वारा फूल-मालाओं से किया गया स्वागत और खुले अधिवेशन में स्थानीय लोगों की उपस्थिति लोगों को यह संदेश देने में सफल रही कि अब विद्यार्थी केवल अपने ही विकास और रोजगार के लिए प्रयासरत नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति को विनाश के कगार पर पहुंचाने वाले भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद के विरुद्ध भी सचेत हो गए हैं।

भारत को मजबूत बनाने के लिए आगे आएं युवा : आंबेकर

बेंगलुरू। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने राष्ट्र के विकास के लिए युवाशक्ति से आगे आने का आह्वान किया है। सोमवार को परिषद के ५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन के भाषण सत्र के दौरान राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर ने कहा, 'राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिये मन में प्रबल इच्छाशक्ति की जरूरत होती है और इस कार्य को सिर्फ युवा शक्ति ही कर सकती है।'

बेंगलुरू में आयोजित अधिवेशन के तीसरे दिन श्री आंबेकर ने कहा कि आज हम एक आजाद देश के नागरिक है। दुनियां भर के लोग इस बात को मानने लगे हैं कि भारत एक दिन विश्वशक्ति बनकर उभरेगा। ऐसे में भविष्य का भारत किस प्रकार का हो, इस विषय पर विचार करना आवश्यक है।

'भविष्य के भारत की परिकल्पना' विषयक भाषण सत्र में उन्होंने कहा कि आज हमारे पास एक आदर्श जीवन प्रणाली है जिसमें थोडी-बहुत कमियां जरूर हैं किन्तु उन्हें भौतिकवादी दृष्टिकोण से दूर नही किया जा सकता है। इसे दूर करने के लिये युवाओं को जागृत करने की आवश्यकता है इसलिये युवाओं के सबसे बडे संगठन होने के नाते विद्यार्थी परिषद की प्रासंगिकता सर्वकालिक है।

उन्होंने कहा कि हमें भारत को सुपर पावर बनाना है लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि हमारी सोच कैसी है और हमें अपनी शक्ति का उपयोग किस प्रकार करना है। हमें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को लेकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परिकल्पना को साकार करना है। भारत में युवाओं की संख्या विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा सर्वाधिक है और युवा ही परिवर्तन की परिभाषा लिखते हैं। इसलिये इस देश के युवाओं को भारत के गौरवशाली इतिहास और संस्कृत की जानकारी होना आवश्यक है।

श्री आंबेकर ने कहा कि देश की संस्कृति व सभ्यता के बिना अगर हम विकास की बात करते है तो यह असंभव है। राष्ट्र की मजबूती के लिये सर्वांगीण विकास की सोच को साकार रूप देने से ही भारत की समृद्धि संभव है। इसके लिये कुछ लोगों को अपना भविष्य और अपना कैरियर दांव पर लगाना होगा।

उन्होंने कहा कि भविष्य के भारत की परिकल्पना के लिये तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। पहला, भारत की पहचान क्या है? दूसरा भारतीय संस्कृति का आधुनिक जीवन में योगदान क्या है? साथ ही इस विषय पर भी विचार करने की जरूरत है कि देश का राष्ट्रीय, सामाजिक सौहार्द कैसा हो? इसके आधार पर भविष्य के भारत की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए। जिस तरह विश्व में तकनीकी और विज्ञान का विकास होगा उस आधार पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम आना स्वाभाविक है। इस पर अंकुश लगाने का कार्य हम युवाओं का है। इसलिये अभाविप कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी और भी बढ जाती है कि इस देश को अपनी संस्कृति के अनुरूप कैसे बनायें। श्री आंबेकर ने कहा कि हमारे लिये कोई लक्ष्य है तो वह है राष्ट्रीय पुनर्निर्माण। यह कार्य इस देश के युवा संगठन अभाविप द्वारा ही संभव है।

भारतीय संस्कृति भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबले ने कहा कि वर्तमान समय में देश के सामने अनेक चुनौतियां उपस्थित हैं। इन चुनौतियों के बीच जो प्रश्न आज भारत के सामने है वह है राष्ट्रीय एकात्मता का प्रश्न, राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रश्न। श्री होसबले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के ५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन के भाषण सत्र के दौरान उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे।

बेंगलूरू में आयोजित अधिवेशन में श्री दत्तत्रेय ने कहा कि एकात्मता कोई ऐसी चीज नही है जो कानून से बनती है और न ही कोई ऐसी वस्तु है जिसकी मांग की जाये। एकात्मता भारत की जीवन शैली है, जो इस राष्ट्र की पहचान है। उन्होंने कहा कि यदि हजारों वर्षों से भारत एक राष्ट्र के रूप में विद्यमान है तो इसका कारण है हमारी संस्कृति जो इस देश की आत्मा की अभिव्यक्ति है। आध्यात्मिकता यहां की आत्मा है और उसकी अभिव्यक्ति इस देश की संस्कृति है, जो सर्वत्र विद्यमान है और एकरूपी है इसलिये इसको हम राष्ट्र की एकात्मता मानते है।

उन्होंने कहा कि यह एक शाश्वत सत्य है कि भारत एक राष्ट्र, एक जन और एक संस्कृति है। इसी प्रकार मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम इस देश की पहचान हैं और इस देश की अस्मिता के प्रतीक भी। अयोध्या मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह विषय किसी मस्जिद या मंदिर का नहीं है, यह राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। भगवान श्रीराम इस देश के रोम-रोम में विद्यमान है। राम के बिना इस देश की कल्पना ही असंभव है और इस बात को अब न्यायालय ने भी स्वीकार कर लिया है।

६ दिसंबर १९९२ को अयोध्या में विवादित ढांचा ढ़हाए जाने की घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस देश में भाषा, जाति, आर्य, द्रविण और उत्तर-दक्षिण के नाम पर भेद उत्पन्न करके भारत को कमजोर करने वाली आंतरिक एवं बाहरी शक्तियों को उत्तर देने के लिये राम मंदिर का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

भगवा आतंकवाद के विषय पर श्री होसबले ने कहा कि राष्ट्रवादी लोगों के ऊपर आरोप लगाकर उन्हें बदनाम करने का प्रयास चल रहा है। देश की एकता को तोडने वाले लोगों ने भगवा आतंकवाद का विषय छेडा है। अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण हुआ किंतु कश्मीर हमसे दूर हो गया तो अखंड भारत की बात सच नहीं होगी। जिस प्रकार कश्मीर के बिना भारत को अखंड नहीं माना जा सकता, उसी प्रकार अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण नहीं हुआ तो भारत एक सम्पूर्ण धार्मिक देश नहीं हो सकता। कश्मीर भारत का अंग बना रहे और अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण हो इसके लिए हमें हर प्रकार के त्याग के लिए तैयार रहना है।

उन्होंने कहा कि यह कैसी विडम्बना है कि भारत में हिन्दुत्व के समर्थक संगठनों को हिन्दू आतंकवादी कहा जाने लगा है और लोगों को बताया जाता है कि यह लोग देश के लिए घातक हैं। इस प्रकार की अफवाहों के पीछे कौन सी मानसिकता काम करती है, इसे हमें स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। देशभक्त संगठन और व्यक्तियों के विरूद्ध इस प्रकार की बातें यही बताती हैं कि आजकल राजनीति में सब कुछ तुष्टीकरण तक ही सीमित होकर रह गया है। देश में जब तक हिन्दुत्ववादी संगठनों के बारे में इस प्रकार की बातों को प्रतिबिम्बित किया जाता रहेगा तब तक अयोध्या में न तो राम मन्दिर का निर्माण और न ही कश्मीर समस्या का समाधान हो पाएगा। आज देश में कश्मीर के बारे में ऐसी बातें की जा रही हैं जैसे वह देश का अंग ही नहीं है। यह एक षड्यंत्र है जिसके अन्तर्गत कश्मीर को अलग ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की जा रही है। कश्मीर हमारे हाथ से निकल जाए इस प्रकार की स्थितियों का निर्माण किया जा रहा है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष का शंखनाद

नई दिल्ली। टू-जी स्पेक्ट्रम से लेकर कई महाघोटालों में जिम्मेदार त्रिगुट प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, श्रीमती सोनिया गांधी व राहुल गांधी के भ्रष्ट कारनामे जनता के समक्ष लाने हेतु अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने ६ जनवरी को देशव्यापी प्रदर्शन से अपने 'मौन तोड़ा' अभियान का प्रारंभ किया।

हाल ही में बेंगलरू में हुए विद्यार्थी परिषद के ५६वें राष्ट्रीय अधिवेशन में एक प्रस्ताव में समूचे विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्टाचार में लिप्त केन्द्र सरकार के खिलाफ राष्ट्रीय महामंत्री उमेशदत्त शर्मा द्वारा देशव्यापी आंदोलन का ऐलान किया गया। परिषद ने अपने अभियान के माध्यम से इस पूरे देश में कांग्रेस की करतूतों को जनता के सामने उजागर करते हुए उससे मौन तोड़ने का आह्वान किया।

परिषद महामंत्री ने आरोप लगाते हुए कहा कि २जी स्पेक्ट्रम महाघोटाले में १.७६ लाख करोड़ की डकैती व राष्ट्रमण्डल खेलों में मची ७८ हजार करोड़ रु. की लूट तथा करगिल शहीदों के नाम पर आदर्श सोसाइटी घोटाला व केन्द्रीय सतर्कता आयोग जैसे महत्वपूर्ण पद पर नेता प्रतिपक्ष के विरोध के बावजूद भ्रष्टाचार की पृष्ठभूमि वाले पी.जे. थॉमस की नियुक्ति बिना प्रधानमंत्री कार्यालय व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी व राहुल गांधी की संलिप्तता के सम्भव नहीं है तथा इस त्रिगुट की भूमिका संदिग्ध है।

२जी स्पेक्ट्रम घोटाला देश के संवैधानिक अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े करता है। नीरा राडिया टेप प्रकरण से साफ है कि किस तरह देश के कुछ उद्योगपति, नौकरशाह व बरखा दत्त, वीर संघवी जैसे कुछ पत्रकार मिलकर यह तय करते हैं कि किस मंत्रालय में कौन राजनेता मंत्री बनेगा, यह प्रधानमंत्री पद की गरिमा की धज्जियाँ उड़ाने वाला है। परिषद का मानना है कि प्रधानमंत्री कार्यालय में जनता पार्टी के नेता डा. सुब्रमण्यम स्वामी के २००८ में लिखे पत्र को पूरे दो वर्षों तक दबाए रखना और सर्वोच्च न्यायालय में दायर हलफनामे और न्यायालय की फटकार के पश्चात ही प्रधानमंत्री कार्यालय का हरकत में आना यह सिद्ध करता है कि इन महाघोटालों में प्रधानमंत्री की भूमिका संदिग्ध है। परिषद का आरोप है कि सरकार द्वारा केवल मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण, केन्द्रीय मंत्री ए. राजा या सुरेश कलमाडी को पद से हटाना तथा भ्रष्टाचार उजागर होने के महीनों बाद जांच एजेंसियों द्वारा छापामारी केवल दिखावा है एवं देश की जनता का भ्रष्टाचार से ध्यान हटाना मात्र है। सरकार द्वारा विपक्ष की संयुक्त संसदीय जांच समिति की मांग को ठुकराना केन्द्र सरकार की मंशा को दर्शाता है।

भ्रष्ट सरकार व सत्तासीन त्रिगुट का पर्दाफाश करने हेतु इसी क्रम में अभाविप १५ जनवरी से ३० जनवरी तक देशव्यापी जनजागरण अभियान चलाकर भ्रष्टाचार में लिप्त इस त्रिगुट को बेनकाब करेगी। अभाविप खुलामंच, दीवार लेखन, पोस्टर, पत्रक वितरण, व्यंग्य चित्र एवं होर्डिंग्स द्वारा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में छात्र-सभाएंए नुक्कड़ सभाए, नुक्कड़-नाटक, गेटमीटिंग व हस्ताक्षर अभियान जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कर भ्रष्टाचार को जनता के समक्ष लाएगी।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ३० जनवरी को देशभर में सांकेतिक भूख हड़ताल कर इस आन्दोलन को और प्रखर बनाएगी। परिषद देश के छात्र-युवाओं व आम जन से भ्रष्टाचार के मुद्दे पर मौन तोड़ने व इस आन्दोलन में शामिल होने की अपील करती है। इसी क्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैम्पस आर्टस फैकल्टी में परिषद कार्यकर्त्ताओं ने सैकड़ों संख्या में जमा होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्र को उठ खड़े होने का आह्वान किया।

कैंडिल मार्च करते हुए परिषद कार्यकर्त्ता विवेकानन्द प्रतिमा पर जमा हुए। यहाँ युवाओं को भ्रष्टाचार के विरुद्ध सजग करते हुए राष्ट्रीय मंत्री श्रीरंग कुलकर्णी, प्रदेश मंत्री रोहित चहल, डूसू अध्यक्ष जितेन्द्र चौधरी, उपाध्यक्ष प्रिया डबास, सचिव नीतू डबास ने सम्बोधित किया।

अन्तर राज्य छात्र जीवन दर्शन दल का भव्य स्वागत

नई दिल्ली। एक राष्ट्र-एक जन-एक संस्कृति एक ऐसा सत्य है, जो सारे देश को एक सूत्र में जोड़ता है। इस क्षेत्र में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रचनात्मक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण में विश्वास रखते हुए ६१ वर्षों से निरंतर कार्य करता आ रहा है। इसी संदर्भ में अभाविप द्वारा १९६६ में अंतर्राज्यीय छात्र जीवन दर्शन नाम के प्रकल्प की स्थापना की गयी। जिसका उद्देश्य सुदूर पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय एकात्मता को मजबूत करना और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है।

उक्त बातें दिल्ली विश्वविद्यालय में अभाविप द्वारा आयोजित (students' experience in inter-state living) सील यात्रा के स्वागत समारोह में यात्रा संयोजक श्रीहरि बोरीकर ने कहा। उन्होंने यात्रा में आये प्रतिनिधियों की जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष भी १८ से ३३ वर्ष आयु वर्ग के प्रतिनिधि भारत दर्शन अनुभव की अपनी राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में प्रवास करेंगे। उन्होंने बताया कि दिल्ली प्रवास के दौरान प्रतिनिधि किसी होटल या होस्टल के बजाय स्थानीय लोगों के स्थानीय परिवारों में ठहरेंगे ताकि सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक लोक कला, त्यौहारों और जीवन शैली का प्रभावी आदान-प्रदान हो सके।

उन्होंने बताया कि इस यात्रा में असम, अरुणाचल, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम तथा त्रिपुरा समेत २३ जिलों व १७ भाषाओं के बोलने वाले कुल ३१ विद्यार्थी शामिल हैं। जो कि बेंगलूरु, मैसूर, मुम्बई, अहमदाबाद और दिल्ली प्रवास के उपरान्त आज विश्व की सांस्कृतिक राजधानी काशी में पहुंचे हैं।

सील यात्रा में आये प्रतिनिधियों ने देश की राजधानी में चार दिनों तक ११-१३ जनवरी तक प्रवास किया। इस दौरान दिल्ली में विभिन्न सास्कृतिक और पारंपरिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके अलावा प्रतिनिधियों ने दिल्ली दर्शन और अतिविशिष्ट महानुभावों और गणमान्य व्यक्तियों से भेंट वार्ता की।

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के सभागार में 'अन्तर-राज्य छात्र जीवन दर्शन' के प्रतिनिधियों का भव्य स्वागत किया गया। छात्रों का यह समूह बंगलुरू, मैसूर, मुम्बई, अहमदाबाद और दिल्ली प्रवास के उपरान्त काशी पहुंचा।

इस मौके पर यात्रा के संयोजक श्रीहरि बोरीकर ने कहा कि महामना की १५०वीं जयन्ती पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आकर हर्ष का अनुभव हो रहा है। यहां के लोगों में जो भाईचारा व आपसी सद्भाव है, वह अतुल्य है जो कहीं नहीं मिल सकता। उन्होंने बताया कि उत्तर-पूर्वी राज्यों में ज्यादातर एकल परिवार प्रणाली है। इस कार्यक्रम से

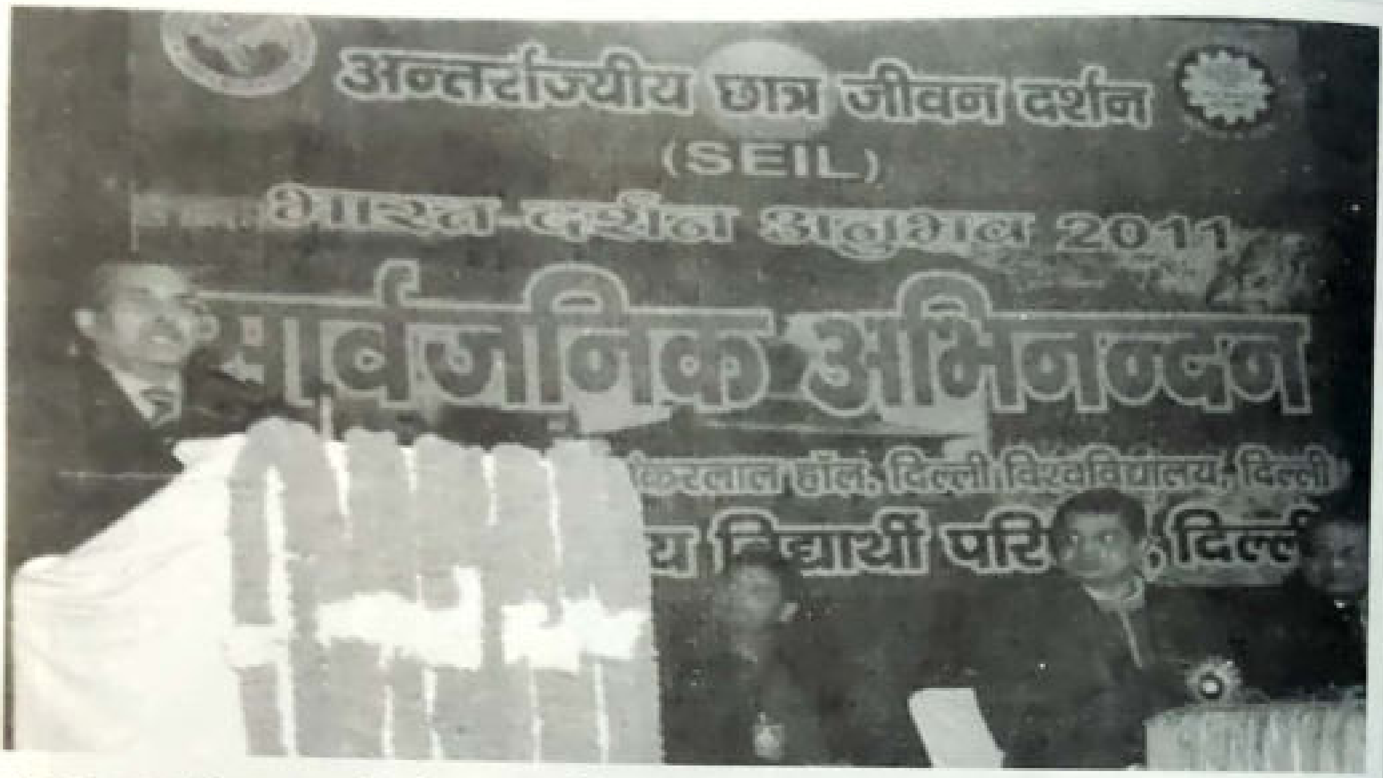

हमें संयुक्त परिवार प्रणाली से रूबरू होने का अवसर मिलता है, साथ ही भारत के सभी वासी एक दूसरे के रीति-रिवाज, भाषा, बोली व खान-पान इत्यादि के बारे में परिचित होते हैं।

तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) के उपाचार्य व अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रजनीश शुक्ल ने कहा कि छात्र जीवन दर्शन यात्रा का वर्तमान स्वरूप नया नहीं, अपितु शंकरदेव और चैतन्य महाप्रभु के समय से चलता आ रहा है। कई महान विभूतियों ने काशी में भारत के समग्र स्वरूप का दर्शन व अध्ययन किया। उसी परम्परा के अनुरूप १९६६ से 'अन्तर-राज्य छात्र जीवन दर्शन' की यात्रा भारत को देखने, जानने और समझने के साथ ही सम्पूर्ण भारत को अपने परिवार के रूप में मानने के ध्येय से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा शुरू की गयी, ताकि भारत के दुर्गम जिलों के युवक भी हम भारत के नागरिक ही नहीं, वरन भारत माता के पुत्र हैं, की भावना से ओत-प्रोत होकर राष्ट्र सेवा में तत्पर हो सकें।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आयुर्वेद विश्वविद्यालय उत्तरांचल के कुलपति प्रो. सत्येन्द्र मिश्र ने कहा कि भारत में सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही आयुर्वेद का जन्म रोग को ठीक करने के लिए ही नहीं, अपितु स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये हुआ। आयुर्वेद की दृष्टि से पूर्वोत्तर राज्यों की भूमि परम उपयोगी है। मैं देवभूमि उत्तरांचल के आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय में आप लोगों को स्वागत के लिए आमन्त्रित करता हूँ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. देवेन्द्र प्रताप सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में महामना के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पं. मदनमोहन मालवीयजी ने देश के युवाओं में शिक्षा के साथ देशभक्ति का संचार कराने हेतु इस महान विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर स्थित हाफलांग जो कि एक छोटा सा नगर है किन्तु राष्ट्रहित में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को गढ़ने का बड़ा स्थल है। आज पूर्वोत्तर के लोगों की सिर्फ एक अपेक्षा है कि समग्र भारतीय उनको अच्छी तरह जाने और समझे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक मंगलाचरण और समापन वन्देमातरम से हुआ। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रो. रमेशचन्द्र पण्डा, प्रो. जयप्रकाश लाल, प्रो. उपेन्द्र पाण्डेय, डॉ. ओमप्रकाश सिंह, डॉ. उपेन्द्र त्रिपाठी, डॉ. हरेन्द्र कुमार राय, अभियन्ता अशोक यादव, श्री हरिराम सचदेवा, श्री सुरेश भट्ट, प्रांत संगठन मंत्री मनोज कान्त, देवेश ठाकुर, उमेश शुक्ला, चन्दन, विपुलेन्द्र, प्रतीक सिंह, अरविन्द दुबे, सौरभ सिंह आदि सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश में अभाविप ने राहुल गांधी का किया कड़ा विरोध

लखनऊ। देश के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय दिल्ली और राजस्थान के छात्रसंघ चुनावों में मिली बुरी हार के बाद कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी का 'यूथ कार्ड' यूपी के छात्रों के बीच भी फेल होता दिखा है। कांग्रेस के युवा चेहरे राहुल गांधी का उत्तर प्रदेश में पहली बार जगह-जगह विरोध हुआ है। छात्रों ने राहुल के दौरे को राजनीतिक स्टंट करार देते हुए कहा कि जब प्रदेश में छात्र संघो का गठन ही नही हो रहा है, तो कांग्रेस महासचिव का छात्रों से संवाद का क्या औचित्य।

इन दिनों राहुल गांधी यूपी के दो दिवसीय दौरे पर थे, लेकिन इस बार वो जहां-जहां गए, वहां-वहां उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। वाराणसी और इलाहाबाद में राहुल गांधी का विरोध हुआ तो लखनऊ से लेकर आगरा और झांसी में भी नौजवानों ने राहुल गांधी का विरोध किया। सम्भवतः यह उनका पहला दौरा है जिसमें उन्हें इतने भारी विरोध का सामना करना पड़ा है।

उत्तर प्रदेश में छात्रों को राजनीति के गुर सिखाने निकले राहुल गांधी से जब प्रदेश के छात्रों ने भ्रष्टाचार, महंगाई, आरक्षण और बेरोजगारी से संबंधित सवाल किया तो राहुल ने चुप्पी साध ली। इस दौरान राहुल का प्रत्येक शहर में विरोध हुआ। सभी स्थानों पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के साथ ही सामान्य विद्यार्थियों का विरोध भी उन्हें झेलना पड़ा।

वाराणसी के काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में राहुल गांधी का विरोध कर रहे एबीवीपी के नेताओं का कहना है कि वह राहुल को यह अहसास दिलाए बिना नहीं जाने देंगे कि वह विश्व विद्यालय परिसर में बिन बुलाए मेहमान हैं। एबीवीपी के विपुलेन्द्र प्रताप सिंह ने आरोप लगाया कि बीएचयू के कुलपति कांग्रेस के एजेंट के तौर पर काम कर कर रहे हैं। राहुल केन्द्र सरकार के शिक्षण संस्थानों में आकर सरकार का गलत उपयोग कर रहे हैं। इस दौरान अभाविप के प्रदेश सह-मंत्री प्रवीण गुंजन ने कांग्रेस महासचिव को छात्र-हितों का विरोधी बताया और कहा कि अपने-आप को युवाओं का नेता कहने वाले राहुल दिल्ली विश्वविद्यालय राजस्थान आदि छात्र संघों में एनएसयूआई की हार से हतोत्साहित है, इसीलिए वे उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव के लिए ठोस पहल नहीं कर रहे हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की प्रयाग महानगर इकाई ने विश्वविद्यालय छात्र संघ भवन के सामने कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव राहुल गांधी का पुतला दहन कर विरोध दर्ज कराया।

राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्याम नारायण पाण्डेय ने कहा कि राहुल गांधी केन्द्र सरकार के शिक्षण संस्थानों में आकर राजनीति कर अपने पद और सरकार का गलत उपयोग कर रहे हैं जिसका आने वाले समय युवा वर्ग मुँहतोड़ जवाब देगा।

इस दौरान प्रमुख रूप से आशुतोष मिश्र, श्याम प्रकाश पाण्डेय, विकास तिवारी, शिवशंकर मिश्र, अजय यादव, आदित्य, मुकुल, रणवीर सिंह, संदीप कुमार, सुधीर केशरवानी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अभाविप का 'मौन तोड़ो' अभियान शुरू

लुधियाना।(९ जनवरी) टू-जी स्पेक्ट्रम समेत कई महाघोटालों की जिम्मेदार केंद्र सरकार के कारनामों से जनता को जागरूक करने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने 'मौन तोड़ा' अभियान शुरू किया है। इसके तहत गुरुवार को घंटाघर में परिषद के सदस्यों ने प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी और राहुल गांधी का पुतला फूंका। इस मौके पर भ्रष्टाचार में लिप्त केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई।

अभाविप के प्रधान अरुण लोमेश और सचिव नवनीत चौहान ने कहा कि अभाविप २५ जनवरी से ३० जनवरी तक देशव्यापी जनजागरण अभियान शुरू करेगी। इसके तहत भ्रष्टाचार में शामिल सरकार के कारनामों को बेनकाब किया जाएगा। इस अभियान में खुला मंच, दीवार लेखन, पोस्टर, पत्रक वितरण, व्यंग चित्र, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में छात्र सभाएं, नुक्कड़ सभाएं, नुक्कड़ नाटक, हस्ताक्षर अभियान आदि कार्यक्रम आयोजित कर भ्रष्टाचार को जनता के समक्ष लाया जायेगा।

अभाविप ३० जनवरी को देशभर में सांकेतिक भूख हड़ताल कर इस आंदोलन को प्रखर बनाएगी। इस मौके पर परिषद के कई सदस्य मौजूद थे।

भोपाल। देश में हो रहे भ्रष्टाचार और घोटालों के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने ज्योति सिनेमा चौराहे पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी का पुतला दहन किया।

राजनेताओं ने लांघी सीमाः इस मौके पर परिषद की प्रांतमंत्री भारती कुम्भारे ने मीडिया से कहा कि केंद्र सरकार में बैठे राजनेताओं ने भ्रष्टाचार की हर सीमा लांघ दी है। २जी स्पेक्ट्रम घोटाला, राष्ट्रमंडल खेलों में घोटाला, आदर्श सोसायटी घोटाला आदि ने देश को पूरे विश्व के सामने शर्मसार कर दिया है। ये सारे घोटाले प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी और राहुल गांधी के संरक्षण में हो रहे हैं।

मौन तोड़ो आंदोलन की शुरुआतः भोपाल में विद्यार्थी परिषद ने पुतला दहन के माध्यम से भ्रष्टाचार के विरोध में मौन तोड़ो आंदोलन का शंखनाद किया है। पुतला दहन के बाद प्रांत कार्यालय मंत्री सीएम धाकड़, भोपाल महानगर सहमंत्री सुनील मगरदे और संगठन मंत्री अजय मिश्रा ने कलेक्टर के माध्यम से राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के नाम ज्ञापन सौंपा।

जोधपुर। केंद्र सरकार पर देश में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हुए परिषद के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को जयनारायण व्यास

विश्वविद्यालय के ओल्ड कैंपस में जमकर प्रदर्शन किया।

कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व महासचिव राहुल गांधी का पुतला भी जलाया। एबीवीपी ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार देश में हुए तीन बड़े घोटालों पर पर्दा डालने का प्रयास कर रही है। एबीवीपी के कार्यकर्ता प्रदेश सहमंत्री वीरेंद्रसिंह सोढ़ा के नेतृत्व में ओल्ड कैंपस पहुंचे। वहां उन्होंने मुख्य द्वार पर केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

इन कार्यकर्ताओं ने २जी स्पेक्ट्रम, कॉमनवेल्थ गेम्स व आदर्श सोसायटी के घोटालों में लिप्त लोगों को बेनकाब करने व दोषियों को सजा दिलवाने की मांग की। सोढ़ा ने बताया कि इस माह देश भर में चलाए जा रहे आंदोलन के तहत देश में फैल रहे भ्रष्टाचार के विरोध में प्रदर्शन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देश भर में बड़े-बड़े घोटाले हो रहे हैं, जिन पर सरकार पर्दा डालने की कोशिश कर रही है। इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

उन्होंने केंद्र सरकार पर इन घोटालों में लिप्त होने का आरोप भी लगाया। इस अवसर पर जेएनवीयू इंजीनियरिंग संकाय के उपाध्यक्ष लोकेंद्र सिंह खंगारोत, छात्रनेता हितेष व्यास, एबीवीपी के महानगर मंत्री धनश्याम देवड़ा, जसवंत सिंह, मयंक रांकावत व रामनिवास विश्नोई भी मौजूद थे।

कपूरथला। यूपीए सरकार महंगाई और भ्रष्टाचार की जननी है जिसके कार्यकाल में बेतरतीब बढ़ती कीमतों और दिन-ब-दिन उजागर होते घोटालों से देश का हर नागरिक अपने-आपको ठगा सा महसूस कर रहा है। ये बातें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् जिला अध्यक्ष माधव धीर ने शुक्रवार को पुतला फूंक प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं और जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कही। शहर के मुख्य बस अड्डा चौक पर एबीवीपी ने महंगाई और भ्रष्टाचार के लिए यूपीए सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए सोनिया गांधी और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के पुतले फूंके।

इस अवसर पर सचिव वैष्णव धीर, विकास कटोच, भव्य सूद, विनोद व राकेश सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

श्रीनगर-कोटद्वार : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार में हो रहे घोटालों और भ्रष्टाचार के विरोध में तहसील में धरना दिया। इस मौके पर सभा में वक्ताओं ने कहा कि केंद्र सरकार भ्रष्टाचार को पोषण और संरक्षण देने का काम कर रही है।

धरना प्रदर्शन के दौरान अभाविप के जिला प्रमुख राजीव खत्री ने कहा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध केंद्र सरकार की नीति संदेह के दायरे में है। राष्ट्रमंडल, टू जी स्पेक्ट्रम और आदर्श सोसायटी घोटाले ने कांग्रेस की भ्रष्ट कार्यशैली को उजागर किया है। धरना प्रदर्शन के बाद अभाविप कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपति भेजे ज्ञापन में घोटालों और भ्रष्टाचार के कारनामों की जांच तथा दोषियों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज करवाने की मांग की।

बुलंदशहर : भ्रष्टाचार और घोटालों का हवाला देते हुए अभाविप कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ हल्ला बोला। कांग्रेस अध्यक्षा और प्रधानमंत्री पर ऐसे मामलों को मौन समर्थन देने का आरोप लगाते हुए राजेबाबू पार्क में विरोध प्रदर्शन किया।

सभा को संबोधित करते हुए परिषद् के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य हेमंत सिंह ने कहा कि गत वर्ष कामनवेल्थ गेम्स, २जी स्पेक्ट्रम, आदर्श सोसायटी, घोटाला जैसे भ्रष्टाचार के कई मामले सामने आए, जिन्होंने देश को पूरी दुनिया में शर्मसार किया। उन्होंने कहा कि जनता की अरबों रुपये की कमाई का बंदरबांट कर सरकार ने देश को धोखा दिया है।

...और अभाविप के सामने सरकार ने घुटने टेके

जबलपुर। यूं तो बीते साल में हाईकोर्ट में हजारों की संख्या में फैसले हुएए लेकिन एक मामला ऐसा भी था, जिसमें मध्य प्रदेश की सरकार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सामने घुटने टेकने पड़े। मुद्दा था कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में होने वाले छात्र संघ चुनावों को प्रत्यक्ष प्रणाली से कराने का। हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर होने के बाद सरकार अगले सत्र से लिंगदोह कमेटी की अनुशंसा के मुताबिक छात्र संघ चुनाव कराने तैयार हो गई।

परिषद की राष्ट्रीय मंत्री अश्विनी परांजपे की ओर से दायर मामले में कहा गया था कि सुप्रीम कोर्ट ने २२ सितंबर २००६ को कहा था कि लिंगदोह कमेटी की सिफारिशों को अमल में लाते हुए कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में प्रत्यक्ष प्रणाली से छात्र संघ चुनाव कराए जाएं। इसके बाद २२ अक्टूबर २०१० को मप्र हाईकोर्ट ने भी कहा था कि वे सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई व्यवस्था का पालन सुनिश्चित कराएं।

याचिका में आरोप था कि प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग ने निर्णय लिया है कि प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में नामांकन के जरिये छात्र संघों का गठन २० और २१ अक्टूबर २०१० को किया जाएगा। आरोप यह भी था कि उच्च शिक्षा विभाग ने लिंगदोह कमेटी की सिफारिशों का गलत अर्थ निकालकर छात्र संघों के गठन की प्रक्रिया का निर्णय लिया, जो अवैधानिक है।

मामले पर १४ अक्टूबर को हुई सुनवाई के बाद सरकार ने आखिरकार अगले शैक्षणिक सत्र से प्रत्यक्ष प्रणाली से ही छात्र संघ चुनाव कराने की अंडरटेकिंग हाईकोर्ट में दी।

अभाविप ने किया थाना कमला नगर का घेराव

भोपाल (५ जनवरी)। झूठा प्रकरण दर्ज करने का आरोप लगाते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने बुधवार शाम कमला नगर थाने का घेराव कर दिया। धरना दे रहे कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

अभाविप ने सोमवार को पहले और दूसरे सेमेस्टर (स्नातक पाठ्यक्रम) में एटीकेटी में फेल छात्रों को पांचवे सेमेस्टर में शामिल करने की मांग को लेकर उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव प्रभांशु कमल के घर का घेराव किया था।

कमला नगर पुलिस ने करीब ६० कार्यकर्ताओं के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया था। इधर अभाविप की प्रदेश मंत्री भारती कुंभारे ने मप्र शासन से श्री कमल के निलंबन की मांग की है। प्रदर्शन के बाद कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया गया।

अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विष्णु दत्त शर्मा का कहना है कि कार्यकर्ताओं ने उग्र प्रदर्शन नहीं किया। बावजूद इसके उनके खिलाफ घर में जबरन प्रवेश करने, तोड़फोड़ और मारपीट का प्रकरण दर्ज किया गया है। पूरे मामले में पुलिस की भूमिका संदेहास्पद रही।

अभाविप की प्रदेश मंत्री भारती का कहना है कि श्री कमल पर पूर्व में भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे हैं, लिहाजा उन्हें इतने महत्वपूर्ण पद पर रहने का हक नहीं है। यदि शासन ने समय रहते श्री कमल के खिलाफ कार्रवाई नहीं की तो परिषद प्रदेश भर में प्रदर्शन करेगी।

सुश्री कुंभारे ने प्रमुख सचिव को हटाने की मांग की है। उनका कहना है कि प्रमुख सचिव तानाशाह और भ्रष्ट हैं। वे एटीकेटी के हजारों छात्रों के भविष्य के मामले को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। इस मामले में उच्च शिक्षा मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा को जल्द ही ज्ञापन दिया जाएगा। कार्रवाई नहीं होने पर आंदोलन किया जाएगा।

इसी संदर्भ में अभाविप ने गुरुवार दोपहर १२.३० बजे ज्योति सिनेमा चौराहे पर श्री कमल का पुतला दहन किया।

उत्तर प्रदेश : अभाविप का प्रदेश अधिवेशन 19 फरवरी से

इलाहाबाद। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्वी उत्तर प्रदेश का ५०वाँ प्रान्तीय अधिवेशन १९ से २१ फरवरी को प्रयाग में आयोजित होगा।

अधिवेशन की तैयारी को लेकर कटरा स्थित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यालय में एक बैठक हुयी जिसमें अधिवेशन के संचालन समिति प्रमुख डॉ धर्मेन्द्र सिंह को बनाया गया।

प्रदेश अध्यक्ष डा. निगम ने बताया कि अधिवेशन के लिए अभाविप द्वारा एक नगर बसाया जायेगा जो पं० मदन मोहन मालवीय के १५० वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके नाम अर्पित होगा।

इस अधिवेशन में प्रदेश के २१ प्रशासनिक जिलों से लगभग एक हजार छात्र, छात्रा व शिक्षक भाग लेंगे।

अधिवशन में प्रदेश व केन्द्र की शिक्षा की वर्तमान स्थिति तथा देश व राज्य की वर्तमान परिदृष्य पर दो प्रस्ताव प्रारित किये जायेंगे। इसके साथ ही संगठनात्मक विस्तार पर गहन चिंतन भी होगा।

एबीवीपी ने किया महंगाई का विरोध

गाजियाबाद, १५ जनवरी। एमएमएच कॉलेज में शनिवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के पदाधिकारियों ने महंगाई और भ्रष्टाचार के विरोध में पुतला फूंककर प्रदर्शन किया।

इस मौके पर मौजूद विद्यार्थियों का कहना था कि प्रतिदिन महंगाई बढ़ती जा रही है। ऐसे में गरीब जनता को सबसे ज्यादा पिसना पड़ रहा है। अब ऐसा समय आ गया है कि जब केंद्र, राज्य और स्थानीय स्तर पर सभी पार्टियों को अपने हितों को त्यागकर सामने आना होगा जिसमें युवाओं की सहभागिता सबसे जरूरी है।

देश में महंगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जबकि उस हिसाब से रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं। इसलिए सरकार को अभी से चेतने की जरूरत है अन्यथा आने वाले दिनों में लोगों को दैनिक उपभोग की वस्तुओं के लिए भी तरसना पड़ेगा। इस मौके पर प्रदर्शनकारियों में महानगर संयोजक धर्मेंद्र सिंह, अमित, विकास तिवारी, संजू और सुनील आदि मौजूद थे।

दलगत राजनीति से ऊपर अभाविप

चंदवारा (कोडरमा) ६ जनवरी : अभाविप चंदवारा इकाई के द्वारा स्थानीय उच्च विद्यालय में मनोज राणा की अध्यक्षता में 'राष्ट्र के पुनर्निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए जिला संयोजक सुनील रजक ने कहा कि विद्यार्थी परिषद दलगत राजनीति से ऊपर उठकर परिसरों में शैक्षिक वातावरण के निर्माण की दिशा में कार्यरत राष्ट्र का पुनर्निर्माण करनेवाला देश का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। देश की दशा और दिशा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आतंकवाद, भ्रष्टाचार तथा शिक्षा का व्यापारीकरण देश के युवाओं के समक्ष एक चुनौती है। इसे समाप्त करने के लिए देश के छात्र-युवाओं से उग्र आंदोलन करने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पिंटू राणा ने किया। इससे पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ मां सरस्वती एवं विवेकानंद की प्रतिमा पर पुष्पार्चन के साथ हुआ।

व्यंग्य

गांधी जी का चश्मा

विजय कुमार

जब समाचार पत्र अरबों-खरबों रुपये के घोटालों से भरे हों, तो एक चश्मे की चोरी कुछ अर्थ नहीं रखती। इसलिए इस पर किसी का ध्यान नहीं गया कि दिल्ली में अति सुरक्षित राष्ट्रपति निवास के पास स्थित ग्यारह मूर्ति से गांधी जी का चश्मा चोरी हो गया।

यह दिल्ली का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां एक विशाल शिला पर ग्यारह मूर्तियां बनी हैं। इनमें गांधी जी के पीछे भारत के विभिन्न समुदायों के लोग प्रदर्शित किये गये हैं। यह मूर्ति उस मान्यता की प्रतीक है, जिसके अनुसार स्वाधीनता आंदोलन में गांधी जी के पीछे सभी धर्म और वर्ग के लोग एकजुट होकर चल दिये थे।

पर एक खोजी पत्रकार ने यह समाचार छाप दिया कि गांधी जी की मूर्ति पर चश्मा नहीं है। पुलिस का कहना है कि चश्मा पिछले छह साल से गायब है। थाने में इसकी रिपोर्ट भी लिखी है पर न किसी ने चोर को ढूंढने का प्रयास किया और न ही नया चश्मा लगाने का। तब से बेचारे गांधी जी बिना चश्मे के ही खड़े हैं।

वैसे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि मूर्ति की आंख पर चश्मा है या नहीं। न जाने कितनी मूर्तियां खुले में आंधी-पानी सहती हैं और उन पर पक्षी न जाने क्या-क्या कर देते हैं। कुछ लोग मूर्ति लगाकर जमीन कब्जाने का धन्धा भी करते हैं पर यदि मूर्ति गांधी जी की हो, तब बात सामान्य नहीं रह जाती।

जो लोग चश्मा लगाते हैं, वे ही उसकी अनिवार्यता समझ सकते हैं। बेचारे गांधी जी छह साल से बिना चश्मे के खड़े हैं, यह सोचकर मेरा हृदय द्रवित हो उठाय पर मैं ठहरा भारत का एक सीधा-सादा नागरिक। पुलिस वालों से इस बारे में कुछ पूछना खतरे से खाली नहीं था। कहीं वे मुझे ही पकड़कर थाने में न बैठा लें। इसलिए मैंने इस बारे में गांधी जी से ही मिलना उचित समझा।

अगले दिन मैं ग्यारह मूर्ति पर जा पहुंचा। आसपास देखा, सब अपने में मस्त और व्यस्त थे। मूर्ति के पास कोई सिपाही भी नहीं था। अतः मैं शिला पर जा चढ़ा। एक बार तो यह देखकर सब मूर्तियां चौंकी पर मेरे पास कागज, कलम, कैमरा आदि देखकर वे फिर से मूर्तिवत हो गयीं। मैंने गांधी जी से बात प्रारम्भ की।

– बापू, इतने सालों से आप यहां खड़े हैं, कैसा लगता है ?

– लगना क्या है सब मूर्तियों की तरह मैं भी हूं। बस यही बहुत है कि मूर्तियों में आज भी मैं सबसे आगे ही हूं।

– सुना है आपका चश्मा पिछले छह साल से गायब है, इससे आपको आसपास देखने में कष्ट होता होगा ?

– नहीं, मुझे कुछ कष्ट नहीं है। मैंने तो स्वाधीनता मिलने से पहले ही आसपास देखना बंद कर दिया था।

– क्यों ?

– पूरा देश जानता है कि जवाहर लाल नेहरू को मैंने ही कांग्रेस का नेता, अपना उत्तराधिकारी और प्रधानमंत्री बनाया था पर उसने मेरी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' को ही कूड़े में डाल दिया। मैंने कांग्रेस को भंग करने को कहा था पर उसने सत्ता के लिए कांग्रेस को ही सीढ़ी बना लिया। अपने सपनों को मरते देखने से क्या लाभ है ? इसलिए मैंने अपने एक बंदर की बात मानकर आंखें बंद कर लीं।

– तो आप किसी और को चुन लेते। आपकी बात कौन टालता ?

– बात तो तुम ठीक कहते हो। जनता और कांग्रेस वाले भी नेहरू की बजाय पटेल के पक्ष में थे पर अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ। इतिहास की घड़ी को उल्टा नहीं घुमाया जा सकता।

– पर बापू, शासन के लिए आपके चश्मे का प्रबन्ध करना क्या कठिन है। देश में मूर्तिकारों की कमी नही है। आप कुछ कहते क्यों नहीं ?

– अब इस उम्र में नया चश्मा बनवा कर मैं करूंगा भी क्या ? मैंने कांग्रेस में सर्वेसर्वा होते हुए भी न स्वयं कोई पद लिया और न अपने बच्चों को लेने दिया पर आज तो कांग्रेस खानदानी पार्टी बन गयी है। उसकी देखादेखी बाकी सब दलों का भी यही हाल हो गया है।

– हां बापू, हमारा लोकतंत्र सचमुच राजतंत्र ही बन गया है।

– इतना ही नहीं। विदेशियों को निकालने के लिए मैंने और भारत के लाखों लोगों ने जेल की यातनाएं सहीं पर आज देश की असली कमान फिर एक विदेशी के ही हाथ में है और इसके लिए वह मेरे नाम का सहारा लिये है। यदि मैं मूर्ति न होता, तो फिर आंदोलन करने के लिए सड़क पर उतर पड़ता।

– लेकिन आपका चश्मा ?

– तुम चश्मे की बात क्यों कर रहे हो ? चश्मा लगाते ही मुझे हर ओर फैला भ्रष्टाचार दिखने लगेगा। मेरे समय में लोग पांच रुपये लेते हुए डरते थे। अब करोड़ों रुपये पचाकर भी डकार नहीं लेते। पहले लोग कहते थे कि हम बाल-बच्चे वाले हैं, रिश्वत नहीं लेंगे। अब कहते हैं कि हम रिश्वत नहीं लेंगे, तो बच्चों को पालेंगे कैसे ? बोफोर्स से लेकर संचार घोटाले तक, सब तरफ उन्हीं के मुंह काले हो रहे हैं, जो मेरा नाम लेकर सत्ता में आते हैं। सरकारी कार्यालयों में मेरे चित्र के सामने ही यह लेन-देन होता है। इसे न देखना ही अच्छा है। यदि मैं जीवित होता, तो आत्महत्या कर लेता।

– पर चाहे जो हो, मैं आपके चश्मे का प्रबन्ध करके ही रहूंगा।

– नहीं, नहीं। तुम तो किसी तरह मेरी आंखें और कान फोड़ने का प्रबन्ध कर दो। इससे यह दुर्दशा देखने और सुनने से तो बचूंगा।

– क्षमा करें बापू। मैं यह पाप नहीं कर सकता। इतना कहकर मैं लौट आया पर बापू को विश्वास है कि जैसे किसी ने चश्मा चुराकर उनके कष्ट कम किये हैं, वैसे ही कोई उनके कान भी जरूर फोड़ेगा। हे राम।

(लेखक : 'राष्ट्रधर्म' मासिक के पूर्व सहायक सम्पादक हैं)

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का जनवरी अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। विभिन्न समसमायिक घटनाक्रमों पर अनेक महत्वपूर्ण आलेखों एवं खबरों का संकलन इस अंक में किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव और विचार हमें नीचे दिये गये पते पर अवश्य भेजें-

बी-५०, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी,
पटेलचेस्ट कैम्पस, यूनिवर्सिटी एरिया,
दिल्ली-११०००७
फोन : ०११-४३०६८२४८
ईमेल : chhatrashakti@gmail.com
वेबसाइट : www.abvp.org

56 वां राष्ट्रीय अधिवेशन महामंत्री प्रतिवेदन

विष्णुदत्त शर्मा (राष्ट्रीय महामंत्री)

यह ५६ वां राष्ट्रीय अधिवेशन कर्नाटक की राजधानी बेंगलूरू में आयोजित हो रहा है। पिछली बार जब हम ऊना में मिले थे तब से अभी तक के बीच कई ऐतिहासिक घटनाएं हुई हैं जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और इतिहास निर्माण करने वाली घटना श्री रामजन्मभूमि पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय भारत की कोटि-कोटि जनता की श्रद्धा को न्यायायिक मान्यता दिया जाना है। इस ऐतिहासिक निर्णय का देश की युवा तरूणाई स्वागत करती है भारत में युवाओं के द्वारा राष्ट्रमंडल खेल एवं एशियाड़ खेलों में जो गौरवशाली उपलब्धियां अर्जित हुई हैं उनका अभिनंदन करते हुए खिलाड़ियों के प्रति हम धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

यह अधिवेशन कर्नाटक की राजधानी बैंगलुरू में हो रहा है। भारतरत्न विश्वेश्वरैया की इस नगरी को देश की सिलिकॉनवैली के रूप में जाना जाता है और यह पहचान इस नगर को युवाशक्ति की मेघा और प्रतिभा के कारण ही मिली है। इस नाते इस नगर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन विशेष महत्व रखता है। क्योंकि यही वह स्थान है जहां से निकले असंख्य युवाओं के ज्ञान और कौशल से भयभीत होकर अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने देश के लोगों से कहा था कि भारतीय युवाओं से सावधान रहो, वे तुम्हारी नौकरी छीन लेंगे। शिक्षा, विज्ञान, तकनीक के क्षेत्र में अध्ययन.अध्यापन एवं अनुसंधान के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में बेंगलुरू की प्रतिष्ठा हम सब लोगों का ज्ञात है।

ऊना से अब तक के राष्ट्रीय परिदृश्य में कमजोर केन्द्र सरकार, लाचार, निकम्मा और देश का भ्रष्ट नेतृत्व षड़यंत्रकारी भारत एवं भारतीयता विरोधी राजनीति के चरम का कालखंड़ रहा है। जिसमें भ्रष्टाचार के नित्य प्रति उभरते नये-नये कारनामों से आम नागरिक भी अपने आप को शर्मसार महसूस कर रहा है। ऐसी विषम स्थिति में कर्नाटक प्रदेश में होने वाला यह अधिवेशन युवा शक्ति को प्रेरणा देने वाले अधिवेशन के रूप में सिद्ध होगा क्योंकि यही वह प्रदेश है जहां पर 'विजयनगरम् साम्राज्य' ने भारतीय दृष्टिकोण से सुशासन, सुव्यवस्था से युक्त विकास केन्द्रित राज्य को लंबे समय तक चरितार्थ करके दिखाया था।

५५ वां राष्ट्रीय अधिवेशन-

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का ५५ वां राष्ट्रीय अधिवेशन देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश के ऊना शहर में दिनांक ३०, ३१ अक्टूबर, १ नबवंर २००६ को संपन्न हुआ। ५५ वें राष्ट्रीय अधिवेशन में २,४७१ प्रतिनिधि सहभागी हुए तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष प्राध्यापक मिलिंद मराठे एवं राष्ट्रीय महामंत्री विष्णुदत्त शर्मा ने ३० अक्टूबर २००६ को प्रातः काल सभी प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण करते हुए राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ किया।

अभाविप की २००६ की गतिविधियां अर्थात जलगांव राष्ट्रीय अधिवेशन से ऊना अधिवेशन तक का संचित महामंत्री प्रतिवेदन के रूप में श्री विष्णुदत्त शर्मा (राष्ट्रीय महामंत्री) द्वारा सभी प्रतिनिधियों के सम्मुख रखा गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा वर्ष २००८-०६ की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद के कार्यकाल की समाप्ति की घोषणा के पश्चात् निर्वाचन अधिकारी डॉ. रामनरेश सिंह (बिहार) ने निर्वाचन प्रकिया की जानकारी देते हुए वर्ष २००६-१० के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष हेतु प्राध्यापक मिलिद मराठे (महाराष्ट्र) तथा राष्ट्रीय महामंत्री हेतु विष्णुदत्त शर्मा (भोपाल) को सर्वानुमति से निर्वाचित घोषित किया।

५५ वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय सुरेश सोनी ने दीप प्रज्जवलन कर किया। अधिवेशन में चार प्रस्ताव पारित हुए जिनमें १. वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य २.राष्ट्रीय सुरक्षा ३. छात्रसंघ चुनाव तथा अभाविप संविधान संशोधन आदि। अधिवेशन में प्रध्यापक यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार डॉ. नंदिता पाठक (चित्रकूट) को रोजगार निर्माण व ग्रामीण विकास हेतु किए गए

कार्यों के सम्मान में दिया गया। अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक २७ से ३० मई २०१० देहरादून (उत्तरांचल) में सम्पन्न हुई। बैठक में १८६ सदस्य उपस्थित रहे। बैठक का संचालन राष्ट्रीय अध्यक्ष प्राध्यापक मिलिंद मराठे एवं राष्ट्रीय महामंत्री विष्णुदत्त शर्मा ने किया। बैठक में संघटनात्मक एवं कार्यक्रमात्मक समीक्षा के साथ वर्तमान परिस्थिति पर चर्चा हुई। बैठक में तीन प्रस्ताव पारित हुए जिसमें १. शिक्षा के व्यापारीकरण को रोकने के लिए आव्हान २. देश की वर्तमान परिस्थिति तथा ३. भारत में अल्पसंख्यक तुष्टिकरण एक खतरनाक (घातक) प्रवृत्ति। बैठक में कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हुए शिक्षा के व्यापारीकरण के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का आव्हान किया।

६० वर्ष पूर्ति के दौरान चले संपर्क अभियान - २२ प्रांतो के १६०६ स्थानों, पर ७३१४ महाविद्यालय, ४०० विद्यालय १६६५ छात्रावास १३२६ मोहल्लों में १८ लाख २८ हजार १६३ विद्यार्थियों से संपर्क हुआ। इस अभियान के दौरान २०११ विस्तारक निकले।

संपर्क अभियान में साहित्य वितरण - देश के २२ प्रांतो में १३लाख ११हजार ६२६पत्रक, ४लाख २०हजार फोल्डर, २लाख स्टीकर, ५०हजार पोस्टर तथा १३लाख २४ हजार ३३१ पुस्तकों का वितरण हुआ तथा संपर्क अभियान के दौरान ३ लाख ६६हजार १४४ फीडबैक फार्म भरे गए। विशेष संपर्क अभियान के दौरान ४१५४ प्रबुद्ध नागरिकों से संपर्क किया गया।

शिक्षा के व्यापारीकरण के खिलाफ ७-८ अगस्त सांसदों को ज्ञापन - २२ जिलों के ६२ स्थानों पर ६१ सांसदो एवं १३ विधायकों को ज्ञापन प्रेषित किए गए जिसमें ६५३० कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिक्षा के व्यापारीकरण पर सम्मेलन - ११ प्रांतो के ८५ जिलों में १०४ स्थानों पर छात्र नेता सम्मेलन सम्पन्न हुए जिसमें २६५ छात्राओं सहित कुल २२२६ छात्र नेता सम्मिलित हुए।

शिक्षा के व्यापारीकरण एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ विराट छात्ररैली एवं प्रदर्शन - ९ प्रांतों में प्रदर्शन हुए जिनमें ११३ जिलों के ८८७ स्थानों के ८१ हजार १८२ कार्यकर्ता प्रदर्शन में शामिल हुए। इन प्रदर्शनों में ६१३ महाविद्यालयों की सहभागिता रही।

अखिल भारतीय शैक्षिक कार्यशाला-: दिनांक १४-१५ फरवरी २०१० को मुंबई में अखिल भारतीय शैक्षिक कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें शिक्षा में परिवर्तन की कल्पना, वर्तमान समस्याएं व उनके समाधान तथा नये प्रवाह आदि विषयों पर चर्चा हुई। कार्यशाला में देश भर से १३५ अपेक्षित कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यशाला में राष्ट्रीय छात्र मांग पत्र तैयार किया गया। कार्यशाला में श्रीरामा जोइस (पूर्व राज्यपाल), श्री के.बी. पंवार (महासचिव अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संगठन), श्री एम.के. श्रीधर (सदस्य सचिव कर्नाटक ज्ञान आयोग) तथा श्री पुरूषेंद्र कौरव (अतिरिक्त महाधिवक्ता मध्यप्रदेश) विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विकासार्थ विद्यार्थी - (कर्नाटक) हासन जिले में वनमहोत्सव, रक्तदान शिविर, दावणगेरे और कोलार चिंतामणी केजीएफ (कोलार गोल्ड फील्ड (अर्थात दुनिया का एक मात्र गहरा सोने की खान) बैंगलोर महानगर में ग्रीन इंडिया मिशन आर्गनिक फारमिंग अर्थात जैविक खेती को बढ़ावा देने का अभियान तुमकूर जिले में आयोजित किया गया।

आंध्रपदेश पर्यावरण विषय पर एसएफडी के तहत अभियान चलाया गया। प्रांत अभ्यास वर्ग में जानकारी देने हेतु कार्यकर्ताओं को आव्हान् दिया गया।

दिल्ली में अंतर महाविद्यलय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें विषय रहा :- राष्ट्र मंडल खेल जिसमें ३५ संस्थानों की सहभागिता रही।

कर्नाटक :- संस्कृति २०१० बैंगलुरू इकाई द्वारा संस्कृति उत्सव का आयोजन प्रशांति कुटीर में किया गया जिसमें योग और अध्यात्म विषय पर चर्चा हुई।

आंध्रप्रदेश :- दीपावली मिलन समारोह ३ नवम्बर २०१० को हैदराबाद में २० देशों के २६३

छात्र सहभागी हुए। केंन्द्रीय सचिव स्तर की बैठक हैदराबाद में हुई।

महाराष्ट्र :- महाबलेश्वर में बन विहार में २५ देशों के ८० छात्रों ने भाग लिया। दीपावली मिलन कार्यक्रम में ३० देशों के ४०० से अधिक छात्र एवं ४० विदेशी छात्रों ने विकलांग बच्चों के साथ दीपावली मनाई।

दिल्ली :- तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ३ एवं ४ फरवरी को तीनमूर्ति सभागार में संपन्न हुआ। जिसमें ५७ देशों के ३४० प्रतिनिधि सहभागी हुए थे। इस सम्मेलन में युवानेता मिलन भी संपन्न हुआ। इसमें श्री श्री रविशंकर जी की प्रमुख एवं प्रेरणादायी उपस्थिति रही।

होली मिलन समारोह :- २७ फरवरी २०१० को नार्थ कैम्पस के खुला संकाय में २५ छात्रों की उपस्थिति में मनाया गया।

दीपावली मिलन समारोह :- नवबंर माह में १६ देशों से ६० छात्रों के सहभागित्व में मनाया गया।

प्रकल्प सेवा कार्य :-

केरल- एरनाकुलम में लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं हेतु कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया गया तथा निर्धन छात्रों हेतु बुक बैंक का संचालन किया गया।

कर्नाटक- अनेक जिलों में रक्तदान एवं स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।

तमिलनाडु- स्वर्गीय के. परमशिवम की स्मृति में स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

आंध्रप्रदेश- रक्तगट सूची निर्माण हेतु रक्त परीक्षण शिविर एवं पुस्तकालय का संचालन।

महाराष्ट्र- दसवीं कक्षा के विद्यार्थी हेतु कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया गया।

झारखंड :- १६ स्थानों पर २४ प्रकल्प चलाये गए जिसमें निःशुल्क शिक्षा शिविर, रक्त कोष, वाचनालय, इत्यादि रहे।

बिहार :- २५ स्थानों पर २५ प्रकल्प निःशुल्क शिक्षा शिविर, वाचनालय, रक्तदान शिविर, बाल संस्कार केन्द्र, निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण शिविर वृक्षारोपण इत्यादि कार्यक्रमों का आयोजन।

पश्चिम उत्तर प्रदेश :-मेरठ महानगर में गरीब विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें एवं कापियों का वितरण। मुरादाबाद जिले के रामपुर में बाढ़ पिड़ीतों के लिए ५ दिनों का सहायता शिविर चलाया गया।

पंजाब :- ब्लड डायरैक्ट्री, फ्री कोचिंग कक्षाऐं, बुक बैंक तथा आर्थिक सहायता शिविर का आयोजन किया गया।

हिमाचल प्रदेश :- प्रदेश में स्व. श्री सुनील उपाध्याय की स्मृति में १२ नवबंर २०१० को ब्लड डोनेशन शिविर लगाया गया।

विदर्भ- निःशुल्क कोचिंग कक्षायें एवं पुस्तकालय का संचालन किया गया।

संगठनात्मक जानकारी २०१०-११

सदस्यता- १७,२६,४४९, इकाई- १७६६, संपर्क स्थान- १६६४, विस्तार केंद्र- ९६५, महाविद्यालय इकाई- ५५५४

प्रांत अभ्यास वर्ग - २६ प्रातों के अभ्यास वर्ग सम्पन्न हुए जिनमें ७७४ स्थानों से, १५६१ छात्र, २८६ छात्राएं, १६४ प्राध्यापक तथा कुल ३३९७ उपस्थिति रही।

प्रांत अधिवेशन - २२ प्रांतों के अधिवेशन सम्पन्न हुए जिनमें १२०९ स्थानों से ३८३९ छात्र, १५०२ छात्राएं, ७५० प्राध्यापक तथा १०,६६० कुल संख्या रहे।

अखिल भारतीय कार्यक्रमः-

९ जुलाई -स्थापना दिवस-१४६३ स्थानों पर कार्यक्रम हुए जिनमें १,५९,४१० विद्यार्थियों ने भाग लिया।

६ दिसंबर-सामाजिक समरसता दिवस- ७३९ स्थानों पर कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिसमें १,०६०८६ छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही।

१२ जनवरी- स्वामी विवेकानंद जयंती - १२३२ स्थानों पर कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिसमें २,७१,६२६ विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रकाशनः- अभाविप के प्रकाशन में मुख्य रूप से केरल में मासिक पत्रिका छात्र-विचार ,आन्ध्रप्रदेश में सांदीपनी, तमिलनाडु में मानवशक्ति , कर्नाटक में विद्यार्थी पथ, हिमाचल प्रदेश में व दिल्ली में राष्ट्रीय छात्रशक्ति का प्रकाशन होता है।

56वां राष्ट्रीय अधिवेशन : पारित प्रस्ताव

अभाविप देश भर में चरम पर पहुंच रहे शिक्षा के व्यापारीकरण एवं शैक्षिक भ्रष्टाचार को केन्द्र में सत्तासीन यूपीए सरकार की अदूरदर्शी एवं स्वार्थ परक तथाकथित शिक्षा नीति का परिणाम मानती है। इस संदर्भ में अधिवेशन में पारित पहला प्रस्ताव 'देश की वर्तमान शैक्षिक स्थिति' पर पारित किया गया।

इसी क्रम में दूसरा प्रस्ताव **'भ्रष्टाचार में लिप्त केन्द्र सरकार द्वारा हिन्दू आतंक के नाम पर भ्रमित करने की कोशिश'** विषय पर पारित किया गया। जिसमें अभाविप ने स्पष्ट रूप से कहा कि राष्ट्रमंडल एवं एशियाड खेलों में पिछले वर्षों की तुलना में कई गुना अधिक पदक जीतना यह दर्शाता है कि देश का युवा खेल जगत में भी भारत का गौरवपूर्ण स्थान बनाने में जुटा है। यह अभिनंदनीय है परंतु देश के संचालनकर्ता के रूप में केन्द्र सरकार के संरक्षण में कई राजनीतिज्ञ, नौकरशाह, उद्योगपति एवं मीडिया से जुड़े लोगों ने देश को शर्मसार किया है।

'पर्यावरण संकट-युवाओं के समक्ष चुनौतियां' विषय पर पारित प्रस्ताव में कहा गया कि पृथ्वी माता, जिस पर हम निवास करते है, का वर्तमान अस्तित्व इतना संकटग्रस्त है कि पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता पर ही प्रश्नचिन्ह लग गये हैं। वास्तव में मानव द्वारा विकास के जिस माडल का अनुसरण किया जा रहा है उसके बुरे प्रभाव हमारे चारों ओर वैश्विक तापमान में वृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन के रुप में दिखाई दे रहे है। जिसके परिणाम स्वरूप पेयजल का संकट, जैविक विविधता की हानि के कारण वनस्पतियों एवं जीवों की विभिन्न प्रजातियों का लुप्त हो जाना, वन संपदा की हानि, गंदी एवं प्रदूषित नदियों, प्रदूषित वायु के कारण ग्रीन हाउस गैसों एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें आदि उत्पन्न हुयी है।

अधिवेशन में श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण पर पारित प्रस्ताव : इलाहाबाद उ. न्यायालय की लखनउ खण्डपीठ द्वारा अयोध्या में रामजन्म भूमि को न्यायिक निर्णय के द्वारा स्वीकृति प्रदान करने तथा श्री रामलला विराजमान को उस भूमि का स्वामी घोषित किये जाने के ऐतिहासिक निर्णय का अभाविप का यह ५६वां राष्ट्रीय अधिवशन स्वागत करता है। किन्तु श्रीरामलला विराजमान की भूमि को विभाजन करने के लिये आये बहुमत के निर्णय को पीड़ाकारी भी मानता है। पुरातात्विक साक्ष्यों, अभिलेखीय प्रमाणों तथा जन आस्था से प्रमाणित श्री रामजन्म भूमि पर न्यायालय द्वारा इससे अधिक स्पष्ट निर्णय की अपेक्षा थी।

उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद एक ऐसा ऐतिहासिक अवसर उपस्थित हुआ था कि इस देश के सभी लोग हिन्दू व मुसलमान मिलकर मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण कर राष्ट्रीय अस्मिता के गौरव को पुनर्स्थापित करते, किन्तु सुन्नी वक्फ बोर्ड, बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी और कुछ तथाकथित वोटबैंकपरस्त राजनीतिज्ञों ने इस ऐतिहासिक संभावना को धूमिल कर दिया है। यद्यपि कि उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद यह स्पश्ट हो गया है कि रामजन्म भूमि निर्विवाद रूप से श्रीराम का जन्म स्थान है और इस नाते से भगवान श्रीराम में आस्था रखने वाले जन-जन की पूजा उपासना का पवित्र स्थल भी है, न्यायालय ने स्वयं अपने निर्णय में यह स्वीकार किया है कि श्री रामलला विराजमान के विग्रह वाला स्थान सदैव रामजन्म भूमि मंदिर का ही रहेगा और इसके स्वामी स्वयं श्री रामलला हैं, किन्तु इस छोटे से भूखंड के विभाजन के समझौतावादी निर्णय ने भव्य राम मंदिर निर्माण में अल्पकालिक बाधा खड़ी कर दी है। न्यायालय द्वारा निर्मोही अखाड़ा तथा सुन्नी वक्फ बोर्ड एवं अन्य मुस्लिमों का वाद निरस्त कर आश्चर्यजनक रूप से श्री रामलला की जन्मभूमि का हिन्दू, मुसलमान एवं निर्मोही अखाड़े के बीच विभाजन स्वीकार कर, इस निर्णय ने सर्व सुखकारी अंत को प्राप्त हो रहे ऐतिहासिक मुकदमे को और लंबा करने के लिये जगह बना दी है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद 2010-2011

अध्यक्ष : प्रा. मिलिन्द मराठे (मुंबई)

महामंत्री : श्री उमेश दत्त (शिमला)

उपाध्यक्ष :

१. डा. पायल मागो (नई दिल्ली)

२. प्रा. किरण हजारिका (मुंबई)

३. डा. रजनीश शुक्ल (काशी, पूर्वी उ.प्र.)

४. श्री रविरंजन सेन (प. बंगाल)

५. डा. रघु अकमंची (हुबली, कर्नाटक)

राष्ट्रीय मंत्री :

श्रीरंग कुलकर्णी (नई दिल्ली)

सुश्री पारूल मंडल (हाबड़ा)

श्री सुरेन्द्र नाईक (नागपुर, महाराष्ट्र)

श्री अनिल कुमार (लखनउ, मध्य उ.प्र.)

श्री कडीयम राजू (हैदराबाद, आंध्र प्रदेश)

श्री मनीष यादव (जयपुर, राजस्थान)

श्री विमल मरांडी (दुमका, झारखंड)

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री सुनील आंबेकर (मुंबई, महाराष्ट्र)

राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री

श्री के. एन. रघुनंदन (बेंगलुरु, कर्नाटक)

श्री सुनील बंसल (नई दिल्ली)

केंद्रीय कार्यालय मंत्री

श्री लवीन कोटीयन (मुंबई, महाराष्ट्र)

केंद्रीय कोषाध्यक्ष

श्री श्याम अग्रवाल (जयपुर, राजस्थान)

केंद्रीय सह कोषाध्यक्ष

श्री महेश तेली (मुंबई, महाराष्ट्र)

विभिन्न अ. भा. कार्यों के प्रमुख

अखिल भारतीय छात्रा प्रमुख

सुश्री ममता यादव (रेवाड़ी, हरियाणा)

अ. भा. जनजातीय छात्र प्रमुख

श्री प्रफुल्ल आकांत (रायपुर, छत्तीसगढ़)

अ. भा. शिक्षण संस्थान कार्य प्रमुख

श्री नागराज रेड्डी (बेंगलुरु, कर्नाटक)

अ. भा. शिक्षण संस्थान संयोजक

श्री आशीष चौहान (कर्णावती)

केंद्रीय सचिवालय मुंबई, सचिव

श्री भरत सिंह

अ.रा. छात्र जीवन-दर्शन प्रकल्प संयोजक

श्री आशीष भावे (मुंबई, महाराष्ट्र)

विदेशी छात्र कार्य (WOSY) प्रमुख

श्री अनिकेत काले (पुणे, महाराष्ट्र)

विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) प्रमुख

श्री मंत्री श्रीनिवास (हैदराबाद, आंध्रप्रदेश)

विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) संयोजक

श्री कुणाल शाह (कर्णावती)

अ. भा. जनसंपर्क एवं मीडिया कार्यालय का कार्य

श्री श्रीरंग कुलकणी (नई दिल्ली)

तकनीकी शिक्षा संचालनालय में परिषद ने जड़ा ताला

रायपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रायपुर महानगर के तकनीकी छात्रों की समस्या को लेकर चल रहे लगातार आंदोलन प्रदर्शन के कारण दिनांक १८ जनवरी को १२ बजे आंदोलन करते हुए अभाविप के तीन कार्यकर्ता विभाग संयोजक रितेश मोहरे, महानगर मंत्री गोविन्द गुप्ता, सहमंत्री धनंजय त्रिपाठी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

अभाविप कार्यकर्ताओं का कहना है कि पिछले माह दुर्ग के देव संस्कृति कालेज में निजी संस्थानो की मानमानी के चलते दो छात्रो ने तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। इसका कारण कालेज प्रशासन द्वारा छात्रों को लगातार कम उपस्थिति के नाम पर अधिक पैसा वसूली को लेकर प्रताडित किया जा रहा था तथा अर्थदंड वसूला जा रहा था। जिसके चलते छात्रों ने आत्महत्या जैसे कदम उठाने पर मजबूर हो गये।

परिषद ने आरोप लगाते हुए कहा कि इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में कई ऐसे इंजिनियरिंग कालेज है जो मनमाना शुल्क छात्रों से वसूल रहे हैं एवं उसकी रसीद भी छात्रों को नही दी जा रही है। कभी पुस्तकालय शुल्क तो कभी अन्य मदों में शुल्क को लेकर आदि प्रकार से छात्रों को मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है और छात्रो को यह कहकर धमकाया जाता है कि आप लोगो को सैत्रिक अंक रोक दिये जाएंगे। छात्रों ने परेशान होकर इसकी शिकायत विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं से की। वियार्थी परिषद के कार्यकर्ता छात्रों की समस्या का निराकरण करने हेतु तकनीकी शिक्षा संचालनालय में पिछले छः माह पूर्व ज्ञापन सौपने गये जिसमें निजी कालेजो पर कार्यवाही करने का आश्वासन संचालक महोदया ने दिया था। अभाविप ने बताया कि अभाविप के मांग पर ही समिति का गठन छात्र हित को देखते हुए किया गया। परन्तु समिति ने भी निजी संस्थानो को लाभ पहुचाने के लिये अधिक शुल्क का निर्धारण बिना किसी मापदंड के आधार पर तय कर दिये। इंजीनियरिंग कालेजों का अन्तरिम शुल्क २६,४०० रूपये व एम.बी.ए. की २५,००० रू. और बी. फार्मेसी का शुल्क २६,००० रू प्रति सेमेस्टर तय कर दिया। विदित है कि छत्तीसगढ़ में गरीब व मध्यमवर्गीय परिवार के छात्र भी उच्च शिक्षा ग्रहण करने इन संस्थानो में जाते हैं। लेकिन अधिक शुल्क होने के कारण छात्र उच्च शिक्षा से वंचित रह जा रह जाते हैं।

इन्ही सब समस्याओं के निराकरण के लिये विद्यार्थी परिषद कई महीने से आंदोलन चला रही है विद्यार्थी परिषद ने बताया कि हमने कई बार संचालक महोदय को विभिन्न मांगो को लेकर ज्ञापन सौपा लेकिन संचालनालय ने एक भी बार किसी भी निजी कालेज पर कार्यवाही नही की।

अभाविप ने नाराजगी जताते हुए १८ जनवरी को ११.३० को उग्र प्रदर्शन किया। एक घण्टे तक कोई भी अधिकारी ज्ञापन लेने नही आया तो कार्यकर्ताओ ने संचालनालय में ताला जड़ दिया जिसके परिणाम स्वरुप तीन कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये।

ज्ञापन सौपने गये कार्यकर्ताओ में विभाग संयोजक रितेष मोहरे, जिला संयोजक नितेश चक्रधारी, महानगर मंत्री गोविन्दा गुप्ता, सहमंत्री धनंजय त्रिपाठी, तकनीकी प्रमुख गौरव शर्मा, जनजाति छात्र प्रमुख देवेन्द्र नेताम, प्रणय साहू, अंशुमान तिवारी, सागर शुक्ला, प्रफुल्ल राय, अंकुश सोनी, सुमित खुराना, तुशाद वर्मा समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता व छात्र मौजूद थे।

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद

अधिवेशन के एक दिन पूर्व हुई राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद की बैठक में अभाविप ने कश्मीर समस्या पर प्रस्ताव पारित कर स्पष्ट रूप से कहा कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा हाल ही में दिये गये बयान कि कश्मीर मा मुद्दा भारत-पाकिस्तान का आपसी मामला है, को अभाविप पैश्विक परिदृश्य में भारत की जीत मानती है। परन्तु विगत छः महीने से कश्मीर में चल रहे हिंसात्मक आंदोलन के संदर्भ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गंभीर चिंता व्यक्त करती है। इस आंदोलन के दौरान सैकड़ों पुलिस और सीआरपीफ के जवान घायल हुए, सैकड़ों सरकारी वाहन जलाये गये एवं दस हजार करोड़ की राष्ट्रीय संपत्ति का नुकसान हुआ है। अभाविप का मानना है कि हाथों में पत्थर लेकर तथाकथित आजादी की नारेबाजी करते हुए हिंसक घटनायें करना एक सोची समझी रणनीति के अंतर्गत हो रहा है। तथा आंदोलन के नाम पर नये प्रकार से आतंकवादफ फैलाने का प्रयास है जो निंदनीय है।

साथ ही राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद ने भारतरत्न मोक्षगुडंम विश्वेश्वरैया के जन्म की १५१वीं वर्षगांठ मनाने का आहवान किया है। वर्तमान वर्ष २०१०-२०११ महान व्यक्तित्व के धनी भारतरत्न मोक्षगुडंम विश्वेश्वरैया;जन्म १५ सितंबर, १८६० मृत्यु १४ अप्रैल १९६२द्ध के जन्म की १५१वीं वर्षगांठ का वर्ष है। वे एक महान अभियंता, सक्षम प्रशासक, जाने-माने राजपुरूष, शिक्षाविद, अर्थशास्त्री, सामाजिक कार्यकर्ता के साथ-साथ एक प्रखर राष्ट्रभक्त थे।

पृथ्वी माता जिस पर हम सभी का निवास है, का वर्तमान अस्तित्व इतना संकटग्रस्त है कि पृथ्वी पर जीवन की निरन्तरता पर ही प्रश्नचिन्ह लग गए है। वास्तव में मानव द्वारा विकास के जिस माडल का अनुसरण किया जा रहा है उसके बुरे प्रभाव हमारे चारों ओर वैश्विक तापमान में वृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन के रूप में दिखायी पड़ रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप पेयजल का संटक, जैविक विविधता की हानि के कारण वनस्पतियों एवं जीवों की विभिन्न प्रजातियों का लुप्त हो जाना, वन सम्पदा की हानि, गंदी एवं प्रदूषित नदियों, प्रदूषित वायु के कारण ग्रीन हाउस गैसों एवं स्वास्थ्य सम्बधी समस्यायें आदि उत्पन्न हुई है। यह उत्तरोत्तर मान्य होता है कि यदि भविष्य में पृथ्वी पर जीवन को बनाये रखना है तो मनुष्य को अपनी विकास पद्धति एवं जीवन शैली में बदलाव लाना होगा। अभाविप का यह ५६वां वां राष्ट्रीय अधिवेशन युवाओं एवं सम्पूर्ण समाज का आहवान करता है कि पर्यावरण बचाने एवं जागरूकता के लिए अपना योग दान दें ।

अभाविप का यह ५६वां राष्ट्रीय अधिवेशन पर्यावरण संकट के प्रति जागरुकता पैदा करने तथा पर्यावरण संरक्षणके लिये सकिय भागीदारी करने हेतु छात्रों एवं युवाओं का आहवान करता है। इसके साथ ही अभाविप इस प्रस्ताव के माध्यम से संपोषणीय विकास एवं स्वछ व नवीनीकरणीय उर्जा स्रोतों की आवश्यकता के सम्बन्ध में जागरुकता उत्तपन्न करने के लिये छात्र समुदाय से आहवान करती है।

> "मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो-उससे अति शीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखो, और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।"
>
> स्वामी विवेकानंद-

लेकर हाथों में हाथ बढ़े सब साथ

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार ने समाज के हर वर्ग के हितों को ध्यान में रखते हुए काम शुरू किये हैं और थामा है हर जरूरतमंद का हाथ।

नि:शक्त विवाह हेतु विशेष सहायता

1 नवम्बर से वर एवं वधू दोनों के नि:शक्त होने पर 50,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि।

उच्च तकनीकी शिक्षा में नि:शक्तों को सहायता योजना

नि:शक्तजनों को उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षण शुल्क एवं निर्वाह भत्ता 1500 रुपये प्रतिमाह तथा स्नातकोत्तर के लिए 1500 रुपये परिवहन भत्ता देने का प्रावधान।

- वर्ष 2009-10 में 66,603 नि:शक्त छात्र छात्रवृत्ति से लाभान्वित।
- नि:व्यक्तियों की समस्या समाधान हेतु टोल फ्री नं. 18002334397 प्रारंभ.
- रीवा, उज्जैन, भोपाल, सागर, ग्वालियर, इन्दौर संभागों में दृष्टि तथा श्रवण बाधितार्थ विद्यालय स्थापित।
- नि:शक्त शिक्षण संस्थाओं में नि:शक्त छात्रों की भरण पोषण राशि अब 525 रुपये प्रतिमाह।
- प्रदेश में 16808 नि:शक्त बच्चों को शासकीय एवं अशासकीय संगठनों के माध्यम से शिक्षण एवं प्रशिक्षण
- सामाजिक सुरक्षा पेंशन से 8,53,150 हितग्राही एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन से 10,56,881 हितग्राही लाभान्वित।

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना

गरीब एवं जरूरतमंद निराश्रित निर्धन परिवारों की विवाह योग्य कन्या, विधवा या परित्यक्ता के विवाह के लिए यह योजना 2006 से शुरू की गयी है। अब तक इसके तहत 1,40,796 कन्याओं के विवाह सम्पन्न हुए।

मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना

भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को सीधे लाभ पहुँचाने के लिए डेढ़ लाख से अधिक मजदूरों को 33 करोड़ 77 लाख रुपये की सहायता।

सबके हितों के लिए समर्पित सामाजिक न्याय विभाग, मध्यप्रदेश शासन

आर.एन.आई. नं. 32464/78

ABVP

अखिल भारतीय वियार्थी परिषद

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad